'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 22 | अंक 20 | 4 जनवरी, 2019 | कुल पृष्ठः 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

हर्षोल्लास के साथ मनाया संघ का स्थापना दिवस

'आंसू, पसीना और खून चाहिए'

हम किसी अन्य से नहीं पिछड़े हैं बल्कि अपने आपसे पिछड़े हैं। अपने ही पूर्वजों से पिछड़े हैं। अपनी संस्कृति, इतिहास, परम्पराओं एवं धर्म से पिछड़े हैं। इस पिछड़ेपन से मुक्ति केवल बातों से नहीं हो सकती इसके लिए कुछ करना प्रारंभ करना पड़ेगा। इस कौम की रात्रि समाप्त हो, सवेरा हो जाए उसके लिए मेहनत करनी पड़ेगी। पूज्य तनसिंह जी कहा करते थे कि इसके लिए तीन चीजों की आवश्यकता रहती है आंसू, पसीना और खून। आंसू का अर्थ है विकलता। विकलता में नवनिर्माण का बीज पड़ता है। तनसिंह जी की ऐसी ही विकलता से 1946 में श्री क्षत्रिय युवक संघ का निर्माण हुआ। यही आंसू है। जब ऐसी विकलता उत्पन्न होती है, टीस उत्पन्न होती है, पीड़ा उत्पन्न होती है, तब व्यक्ति पड़ा नहीं रहता, उठ खड़ा होता है, कुछ करने लगता है। करने में संघर्ष करना पड़ता है, कष्ट सहने पड़ते हैं और यही पसीना बहाना है। जो कष्टों को देखकर कुतर्क करते हैं उनका उत्तर श्रद्धेय आयुवानसिंह जी की पुस्तक 'मेरी साधना' का 111वां अवतरण है जिसमें जीवन के लक्ष्य से कुछ भी न छिपाने की बात कही गई है और ऐसा करने के लिए पसीना बहाना पड़ता है। अंतिम है खून। आवश्यकता होने पर जीवन लक्ष्य के लिए खून बहाने को भी तत्पर रहना पड़ता है। जो इन तीनों को बहाने को तत्पर रहता है वही यह कार्य कर सकता है। मेरे जीवन का एक लक्ष्य है और जीवन के समस्त व्यापार इसके निमित्त हैं यह जब तक समझ में नहीं आता तब तक ऐसा करना संभव नहीं। जो करना नहीं चाहते बल्कि कुछ पाना चाहते हैं वे यहां आकर दुःख ही पाएंगे। जो त्याग और उत्सर्ग करने को तत्पर होंगे उन्हें दुःख नहीं होगा। कष्ट भी उन्हें विचलित नहीं करेंगे।

22 दिसम्बर को संघ के 73वें स्थापना दिवस पर केन्द्रीय कार्यालय संघशक्ति में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि संघ यह दावा नहीं करता कि संघ में आने वाले सभी ठीक हो गए हैं। माया इतने चक्कर काटती है कि कोई कब डिग जाए पता नहीं चलता। संघ में भी अनेक लोग आगे बढ़कर गिर जाते हैं क्यों कि माया चकमा देती है। संघ में साधना है, संघर्ष है, कष्ट है, तपना पड़ता है लेकिन हम यह सोचें कि संघ में आने वाले सभी देवपुरुष हैं तो यह सही नहीं है। गीता के अनुसार हजारों में से कोई एक सुनता है। ऐसे हजारों में से कोई एक चलता है और उन चलने वाले हजारों में से ही कोई एक पहुंचता है। संघ का काम करने वाले ऐसे हजारों नहीं बल्कि सैकड़ों ही हैं और उन्हीं के भरोसे संघ चलता है। इसीलिए मैं कहता हूं कि संघ अभी 72 वर्ष का किशोर ही हुआ है। अभी युवा भी होना है। लेकिन तनसिंह जी का कहना था कि हर रात्रि की भोर होती है, वह यहां भी होगा, आहट सुनाई दे रही है, लेकिन धैर्य की आवश्यकता है, समय बहुत लगेगा। अनेकों संकल्प, विकल्प एवं प्रकल्प हैं जिनके माध्यम से संघ चल रहा है, सतत अभ्यास कर रहा है। इस सत्य की स्वीकार कर कि फूल चुनने हैं तो कांटे तो लगेंगे ही, धैर्यपूर्वक सतर्क होकर चलना है, यही एक मात्र उपाय है। अपने छोटे से जीवन में संघ ने अनेक संकट देखे हैं।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

श्री क्षत्रिय युवक संघ

ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर-302 012 दूरभाष : 0141-2466353
E-Mail : sanghshakti@gmial.com

22 दिसम्बर 2018

संघ स्थापना दिवस

नववर्ष-सन्देश

प्रिय आत्मीय जन

वर्तमान में क्षत्रिय वर्ग के लिए आज का दिन एक ऐतिहासिक पर्व है। हजारों वर्षों से भारत वर्ष पर विदेशियों की दृष्टि रही है। उन्होंने हमारे देश पर अनेकों बार आक्रमण किए। इसी वर्ग के लोगों ने उन आततायी आक्रमणकारियों के इरादे सफल नहीं होने दिए। अपने प्राण न्यौछावर करके भी भारतवर्ष के जन-जन को गुलाम होने से बचाया। 1300 वर्ष पूर्व पश्चिम से एक क्रूर राष्ट्रवादी ताकत ने पूरे विश्व को अपने अधीन करने का प्रयत्न किया। तलवार के बल पर कत्ले आम करके देशों को गुलाम बनाते, धर्म परिवर्तन करते हुए अपने राष्ट्रवाद का विस्तार किया। पूरे संसार को अपने गिरफ्त में ले लिया। हमारा देश भी अछूता नहीं रहा। बार-बार आक्रमण करके हमारी समृद्धि को लूट कर ले गए। क्षत्रिय वर्ग ने बहुत संघर्ष किया। हमारी कुछ त्रुटियों के कारण आखिरकार हमें गुलाम बना लिया गया। उसी आंधी ने हमें आपस में लड़ा कर अपना शासन स्थापित कर लिया। वह आंधी कमजोर पड़ी तो एक-दूसरे छद्म और व्यापारिक वर्ग ने पश्चिम से आकर पूरे देश को गुलाम बना लिया। क्षत्रियों ने उनका बड़ा मुकाबला किया। किन्तु अपनी आजादी को न बचा सके। लगभग दो शताब्दी बाद उनको भी भारतवर्ष से जाना पड़ा और देश आजाद हुआ। परन्तु हमारा स्वराज भी पूरे देश को खाने लगा। परिणामतः आज देश की दशा क्या है सभी जानते हैं।

देश पर होने वाले आक्रमणों से संघर्ष करने वाला वह क्षत्रिय वर्ग कोई और नहीं, राजपूत कहलाने वाले हमारे पूर्वज ही थे। लगातार आक्रमणों से त्रस्त होकर हम थक गए और हमारी दशा के साथ दिशा भी बदल गई। कमजोर और रुग्णावस्था को हमने अपनी नियती मानली। पुरुषार्थ छूट गया। सब कुछ भूल गए और जमाने के साथ बह गए। अपने इतिहास, संस्कृति, धर्म-कर्म को भूल गए। पूरी जाति निष्प्राण सी हो गई। इसी समय 72 वर्ष पूर्व एक युगदृष्टा पूज्य तनसिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की। उसी थकी मांदी रुग्ण जाति में प्राण फूंके। पूरी जाति को पुनः स्वास्थ्य प्रदान कर शक्तिशाली बनाने का बीड़ा उठाया। सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली पर संगठन खड़ा हो गया। प्रतिदिन अभ्यास होने लगा। युवावस्था प्राप्त होने से पूर्व ही युवक-युवतियों में ऊर्जा बढ़ने लगी। शताब्दियों से बंद पड़ी शिराओं में रक्त संचार होने लगा। नगर-गांव-ढाणी तक विस्तार होता जा रहा है। पूरी राजपूत जाति अभी जाग्रत नहीं हुई है क्योंकि शताब्दियों का अन्धकार मिटाने में समय तो लगेगा लेकिन रात कितनी भी लम्बी क्यों न हो आखिर उषाकाल आता ही है। धैर्य और दक्षता के साथ पथ विचलित पूरी राजपूत जाति को पुनः उस त्याग और बलिदान के मार्ग पर प्रतिष्ठित करना ही हमारा अभियान है, ताकि न केवल अपनी जाति, न केवल देश परन्तु समस्त मानव जाति के जीवन में सुख और समृद्धि आ सके। यही क्षत्रिय को भगवान द्वारा सौंपा गया कर्तव्य है। इस कर्तव्य पालन को ही क्षात्रधर्म कहा गया है। इसका पालन ही हमारे इस जीवन का लक्ष्य है। अहर्निश कर्म में रत रह कर पूरी जाति को जगाना और फिर सब सोए हुए लोगों को जगाना ही पड़ेगा। विष का विनाश और अमृत की रक्षा करना ही क्षात्रधर्म है। चलते रहे- चरैवेति चरैवेति। आप सब के उज्ज्वल, शान्त, निर्भय जीवन के लिए संघ के 73वें वर्ष में प्रवेश पर आप सबको नववर्ष पर मंगल कामनाएं।

सदैव आपके साथ खड़े रहने की कामनाओं के साथ

आपका

(भगवानसिंह)
संघ प्रमुख

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

महापुरुषों ने गुरु की तुलना कुम्हार से की है जो घड़े को बनाते समय ऊपर से चोट करता है तो अंदर से दूसरे हाथ से सहारा प्रदान करता है। कठोरता और कोमलता दोनों का उचित सामंजस्य किसी भी निर्माण में आवश्यक है और पूज्य तनसिंह जी ऐसे ही निर्माता थे। उन्होंने अनेकों लोगों के जीवन को गढ़ा और उनके गढ़े हुए लोगों ने समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अपना योगदान दिया। लेकिन उनकी निर्माण प्रक्रिया में भी कुम्हार की तरह कठोर और कोमल दोनों पक्ष प्रभावी रहे। ऐसी अनेक घटनाएं हैं जिनसे लगता है कि वे बहुत कठोर व्यक्ति थे, बहुत क्रोध करते थे, असावधानी को बिल्कुल पसंद नहीं करते थे लेकिन साथ ही उन्हीं घटनाओं में उनका कोमल स्वरूप भी छिपा रहता था और प्रकट भी होता था।

सिवाणा में दुकान की एक घटना है। उस समय दुकान का प्रारम्भ का समय था। पूज्यश्री के पास रहने वाले एक दो लोगों को छोड़कर अन्य सभी नए-नए आए थे एवं पूज्यश्री उनके जीविकोपार्जन का साधन जुटाने के साथ-साथ उनका जीवन भी गढ़ रहे थे। वे लोग बार-बार गलतियां करते थे और साहब श्री उन्हें बार-बार अहसास भी करवाते थे। एक बार किसी गलती पर सबक सिखाने की ठानी और दुकान व मकान के ताला लगाकर बिना कुछ बताए जोधपुर रवाना हो गए। किसी की कुछ पूछने की हिम्मत नहीं हुई। सभी दुकान के आसपास भटकते रहे लेकिन शाम को रुकेंगे कहां, किसके पास जाएंगे, कोई ठिकाना ना था। सभी के चेहरे उतरे हुए एवं चिंतित थे। शाम होने पर पड़ौस की दुकान वाले ने वर्तमान संघ प्रमुख श्री को बुलाया और चाबी सौंपते हुए कहा कि तनसिंह जी जाते समय देकर गए थे और कहा था कि शाम को आपको दे दूं। यह था उनका कोमल और कठोर स्वरूप। इसी कठोरता और कोमलता का परिणाम था कि जो भी उनके संरक्षण में आया उसका व्यक्तित्व गुणित होता गया।

सिवाणा व सोजत में स्नेहमिलन

सिवाणा प्रांत के स्वयंसेवकों का स्नेहमिलन 23 दिसम्बर को कल्ला रायमलोत छात्रावास सिवाणा में रखा गया। संभाग प्रमुख मूलसिंह काठाड़ी के नेतृत्व में 16 दिसम्बर को जयपुर में आयोजित वार्षिक बैठक में मिले निर्देशों की विस्तार से चर्चा की गई एवं आगामी सत्र के लिए लक्ष्य तय किए गए। इसी प्रकार 15 दिसम्बर की शाम सोजत सिटी में सहयोगियों का स्नेहमिलन केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा के सान्निध्य में रखा गया जिसमें आगामी मा.प्र.शि. को लेकर चर्चा की गई।

जीवनोपयोगी जानकारी

गतांक से आगे.... - अभयसिंह रोडला

विगत अंक में हमने कृषि विज्ञान विषय वर्ग के छात्रों हेतु 12वीं कक्षा के पश्चात् उपलब्ध पाठ्यक्रमों की जानकारी प्राप्त की थी। इस अंक में हम इस वर्ग के स्नातक तथा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु आयोजित होने वाली महत्त्वपूर्ण प्रवेश परीक्षा ICAR - AIEEA के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) एक स्वायत्त संगठन है जो कृषि मंत्रालय के अंतर्गत आने वाले कृषि-शोध एवं शिक्षा विभाग के अधीन कार्य करता है। ICAR देश में कृषि क्षेत्र में शोध व शिक्षा का समन्वय, निर्देशन व प्रबंधन करने वाला सर्वोच्च निकाय है। भारत में 71 कृषि विश्वविद्यालय तथा 101 ICAR संस्थान इस समय कार्यरत हैं। देश के सभी कृषि विश्वविद्यालयों में में 15 प्रतिशत स्नातक तथा 25 प्रतिशत स्नात्तकोत्तर सीट ICAR - AIEEA प्रवेश परीक्षा के माध्यम से भरी जाती है। ऑल इंडिया एन्ट्रेन्स एग्जाम फॉर एडमिशन टू बैचलर एण्ड मास्टर्स डिग्री प्रोग्राम्स इन एग्रीकच्लर एण्ड अलाईड साईन्सेज नामक यह परीक्षा ICAR के शिक्षा प्रभाग द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित की जाती है। बैचलर तथा मास्टर्स के अतिरिक्त पीएचडी में प्रवेश हेतु 202 सीनियर रिसर्च फैलाशिप का चयन भी इस परीक्षा के आधार पर किया जाता है। ICAR - AIEEA परीक्षा के बारे में कुछ ध्यान में रखी जाने योग्य बातें इस प्रकार हैं :

- यह परीक्षा ऑफ लाइन मोड में आयोजित होती है।
- यह OMR तकनीक पर आधारित परीक्षा है।
- इसमें केवल बहुवैकल्पिक (वस्तुनिष्ठ) प्रकार के प्रश्न पूछे जाते हैं।
- इस परीक्षा का माध्यम अनिवार्य रूप से अंग्रेजी तथा हिन्दी है अर्थात् प्रश्न-पत्र दोनों भाषाओं में उपलब्ध होगा। यद्यपि स्नात्तकोत्तर पाठ्यक्रम हेतु परीक्षा दे रहे छात्रों हेतु प्रश्न-पत्र केवल अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध है।
- परीक्षा में बैठने वाले अभ्यर्थी के पास आधार कार्ड होना आवश्यक है।
- आवेदन पत्र अप्रेल माह में भरे जाते हैं तथा परीक्षा सामान्यतया मई माह में आयोजित होती है।
- ICAR की अधिकृत वेबसाईट पर जाकर आवेदन किया जा सकता है।
- स्नातक कोर्सेज में प्रवेश हेतु न्यूनतम योग्यता विज्ञान वर्ग से 12वीं कक्षा उत्तीर्ण है।
- सामान्य वर्ग के छात्रों हेतु AIEEA-UG में 500/-, AIEEA-PG में 600/- तथा AICE - SRF (PGS) में 1200/- रुपए शुल्क निर्धारित है।

उक्त परीक्षा की और अधिक विस्तृत जानकारी प्राप्त करने हेतु ICAR की अधिकृत वेबसाइट ICAR.ORG.IN को विजिट करें। **(क्रमशः)**

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

'मतीरा' थार के रेगिस्तान में वर्षा ऋतु के समय उगने वाली बेल में लगने वाला एक फल होता है जो लगभग तरबूज के समान दिखता है। सिन्ध, जैसलमेर, बाड़मेर में मतीरे को 'कालींग' कहते हैं। लेख में कुछ ऐतिहासिक प्रसंग दिए जा रहे हैं जिनमें मतीरा मुख्य किरदार में है।

नागौर के राव अमरसिंह की लाश को आगरा के किले से लेकर आने वाले मारवाड़ के यौद्धा बल्लूजी चाम्पावत कुछ समय बीकानेर के राजा करणसिंह के दरबार में नियुक्त रहे थे। घटना इस प्रकार हुई कि एक रोज राजा ने एक मतीरा अपने चाकर के साथ बल्लू जी को भेजा। चाकर ने उन्हें मतीरा देते हुए कहा कि 'मतीरो'। बल्लूजी यह कह कर बीकानेर से चल दिए कि राजा हमे यह कह रहे हैं कि यहां मत रहो तो हम दूसरी जगह चले जाएंगे। जब राजा को इस बात का पता चला तो उन्होंने बल्लूजी को रोकने की लाख कोशिस की, पर वे नहीं रूके।

'मतीरा की राड़'

मुगल बादशाह शाहजहां के शासन में बीकानेर के राजा करणसिंह एवं मारवाड़ के नागौर परगने के राव अमरसिंह आगरा में सेवारत थे। उसी समय एक घटना बीकानेर एवं नागौर की सीमा पर घटी जो इतिहास में 'मतीरे की राड़ (लड़ाई)' के नाम से जानी जाती है। यह कोई प्रसिद्ध घटना नहीं है परन्तु अपने आप में अनूठी जरूर है। 1644 ई. में यह वाकिया हुआ था। बीकानेर रियासत के सीलवा गांव एवं नागौर शासन के जाखणिया गांव की सीमा आपस में सामानान्तर स्थित थी। यही दोनों रियासतों के मध्य अन्तिम सीमा रेखा थी। मतीरे की बेल बीकानेर के सीलवा गांव की सीमा में ऊगी थी एवं बेल का सिरा नागौर के जाखणिया गांव की सीमा में जाकर फैल गया था तथा उसमें मतीरा वहीं लगा था। मतीरे के फल के हक को लेकर दोनों गांवों के निवासियों के मध्य विवाद छिड़ गया। जब यह विवाद छिड़ा तब बीकानेर के राजा शाहजहां की तरफ से दक्षिण भारत में बुरहानपुर के मिशन पर थे एवं नागौर के राव सुदुर उत्तर पश्चिम में काबूल में तैनात थे। मतीरे को लेकर हुए विवाद पर दोनों राज्यों की ओर से अपने शासकों के माध्यम से शाही दरबार में शिकायत की गई परन्तु कोई सुलह हो इससे पूर्व ही अपने राज्यों के शासकों की अनुपस्थिति में ही युद्ध छिड़ गया। बीकानेर की सेना का नेतृत्व उनके कामदार रामचन्द्र मुखिया ने एवं नागौर की सेना का संचालन सिंघवी सुखमल ने किया। एक मतीरे जैसे फल की छोटी सी बात को लेकर छिड़ा मामूली विवाद भयानक युद्ध में तब्दील हो गया। इस युद्ध में दोनों ओर से अनेकों योद्धा काम आए। युद्ध में बीकानेर की विजय हुई परन्तु मतीरा किसने खाया ये नेपथ्य में है। काबुल से लौटने पर राव अमरसिंह अपने कामदार पर खूब नाराज हुए। परन्तु तब तक सब कुछ घट चुका था। एक चारण कवि ने इस युद्ध पर कहा कि 'एक सियालिये रे खज' (मतीरा सियार नामक पशु के खाने का ही तो फल होता है) पर इतनी बड़ी राड़ (लड़ाई) कर दी। हजारों बहादुर लड़ मरे। अरे सरदारों यह मतीरा मुझे दे देते और इसको पाने की लड़ाई खत्म हो जाती।

वयोवृद्ध पेंशनर्स का सम्मान

राजस्थान पेंशनर्स मंच झोटवाड़ा, जयपुर द्वारा 17 दिसम्बर को साधारण सभा का आयोजन किया गया जिसमें 24 वयोवृद्ध पेंशनर्स का सम्मान किया गया। साधारण सभा में कार्यकारिणी का निर्विरोध निर्वाचन किया गया। वर्तमान कार्यकारिणी अध्यक्ष चैनसिंह राठौड़ बरवाली का निर्विरोध निर्वाचन हुआ। साधारण सभा में पेंशनर्स की समस्याओं पर चर्चा भी की गई।

शिविर की तैयारी हेतु बैठक

जैसलमेर के देगराय मंदिर में 25 दिसम्बर से आयोज्य मा.प्र.शि. की तैयारी बाबत मंदिर प्रांगण में बैठक आयोजित की गई जिसमें क्षेत्र के समाज बंधुओं ने शिविर की व्यवस्था एवं प्रचार प्रसार को लेकर चर्चा की।

श्री क्षत्रिय युवक संघ

माननीय संघप्रमुख श्री के निर्देशानुसार संघ के 73वें सत्र (22 दिसम्बर 2018 से 21 दिसम्बर 2019) के लिए निम्नानुसार उत्तरदायित्व विभाजन किया गया है :-

संचालन प्रमुख	लक्ष्मण सिंह बैण्यांकाबास		98281-30001
	केन्द्रीय कार्यकारी		
सभी क्षेत्र	श्री रेवंतसिंह पाटोदा		86969-36935
जयपुर, शेखावाटी, नागौर, बीकानेर	श्री गजेन्द्रसिंह आऊ		99826-11005
जोधपुर, पाली, जालोर, सिरोही	श्री प्रेमसिंह रणधा		94147-01479
बाड़मेर, बालोतरा	श्री देवीसिंह माडपुरा		70233-01275
जैसलमेर, पोकरण	श्री रामसिंह माडपुरा		94131-84223
अजमेर, चित्तौड़, उदयपुर, वागड़, हाड़ौती	श्री गंगासिंह साजियाली		94143-96375
गुजरात	श्री महेन्द्रसिंह पांची		98255-84755
	केन्द्रीय कार्यालय एवं प्रभारी		
समन्वय, संस्थाएं, राजनीति एवं सरकारी विभाग	श्री महावीरसिंह सरवड़ी		98281-05994
शिविर कार्यालय	श्री दीपसिंह बैण्यांकाबास		99830-78181
शाखा कार्यालय	श्री महेन्द्रसिंह गुजरावास (राजस्थान) श्री छन्नुभा पच्छेगांव (गुजरात)		94130-59211 98244-52947
संस्थान कार्यालय	श्री शंकरसिंह महरोली		94607-75557
संयोमा	श्री कृष्णसिंह राणीगांव		94144-20009
संघशक्ति-पथप्रेरक सदस्यता	श्री खींवसिंह सुल्ताना		94601-00194
लेखा	श्री गंगासिंह साजियाली		94143-96375
समाचार पत्र	श्री रेवंतसिंह पाटोदा		86969-36935
महिला प्रकोष्ठ	श्री जोरावर सिंह भादला (राजस्थान) श्री अजीतसिंह धोलेरा (गुजरात)		99824-08873 98980-22951
वेबसाइट व सोशल मीडिया	श्री अभयसिंह रोड़ला श्री हर्षवर्धन सिंह रेड़ा		70428-79890 96430-53387
	केन्द्रीय कार्यकारी	**श्री गजेन्द्रसिंह आऊ**	
संभाग प्रमुख	**श्री राजेन्द्रसिंह बोबासर**		80000-74077
प्रान्त	जयपुर शहर	श्री सुधीरसिंह ठाकरियावास	98281-30002
	जयपुर ग्रामीण (दक्षिण पश्चिम)	श्री देवेन्द्र सिंह बड़वाली	92143-10288
	जयपुर ग्रामीण (उत्तर पूर्व)	श्री रामसिंह अकदड़ा	94615-85348
	दौसा (भरतपुर, धौलपुर)	श्री मदनसिंह बामण्या	94147-88158
	अलवर	श्री जितेन्द्रसिंह देवली	98291-11386
संभाग प्रमुख	**श्री शिम्भूसिंह आसरवा**		99821-36763
प्रान्त	नागौर (नागौर, मेड़ता, जायल, खींवसर)	श्री उगमसिंह आशापुरा	99503-52565
	कुचामन (डेगाना, नावां, मकराना, परबतसर	श्री नत्थुसिंह छापड़ा	97720-97087
	लाडनूं (डीडवाना, सुजानगढ़, बींदासर)	श्री विक्रमसिंह ढींगसरी	96728-77549
	शेखावाटी	श्री जुगराज सिंह जुलियासर	98288-34449
संभाग प्रमुख	**श्री रेंवतसिंह जाखासर**		94130-13884
प्रान्त	बीकानेर शहर	श्री खींवसिंह सुल्ताना	94601-00194
	नोखा	श्री करणीसिंह भेलू	99285-14502
	कोलायत	श्री गुलाबसिंह आशापुरा	99823-10968
	डूंगरगढ़	श्री भागीरथ सिंह सेरुणा	80032-93524
	छतरगढ़	श्री शक्तिसिंह आशापुरा	98290-52037
	चूरू	श्री राजेन्द्रसिंह आलसर	94145-82311
	केन्द्रीय कार्यकारी	**श्री देवीसिंह माडपुरा**	
संभाग प्रमुख	**श्री कृष्णसिंह राणीगांव**		94144-20009
प्रान्त	बाड़मेर शहर	श्री महिपाल सिंह चूली	94132-92849
	शिव	श्री राजेन्द्रसिंह भिंयाड़ (द्वितीय)	94146-55723
	गडरा	श्री नखतसिंह जानसिंह की बेरी	99830-13344
	चौहटन	श्री उदयसिंह देदूसर	99503-44141
	गुड़ामालानी	श्री गणपतसिंह बूठ	90575-98339
संभाग प्रमुख	**श्री मूलसिंह काठाड़ी**		94146-33980
	बालोतरा	श्री राणसिंह टापरा	94143-84408
	सिवाना	श्री भैरूसिंह पादरू	94141-89665
	बायतु	श्री मूलसिंह चांदेसरा	94149-00405
	कल्याणपुर	श्री वीरमसिंह थोब	98284-27696
	केन्द्रीय कार्यकारी	**श्री रामसिंह माडपुरा**	
संभाग प्रमुख	**श्री गोपालसिंह रणधा**		77424-99083
प्रान्त	जैसलमेर शहर	श्री नरेन्द्रसिंह तेजमालता	94146-56448
	चांधन	श्री तारेन्द्र सिंह जिंजनियाली	99289-74111
	म्याजलार	श्री हरीसिंह बेरसियाला	75686-81821
	जिंजनियाली	श्री भोजराजसिंह तेलमालता	95301-11501
	मोहनगढ़	श्री हाकमसिंह देवड़ा	90572-48829
	रामगढ़	श्री पदमसिंह रामगढ़	90010-71485
संभाग प्रमुख	**श्री गणपतसिंह अवाय**		94141-49797
प्रान्त	पोकरण	श्री नरपतसिंह राजगढ़	99299-24955
	रामदेवरा, नाचना	श्री अमरसिंह रामदेवरा	70735-08070
	फलोदी	श्री भवानीसिंह पीलवा	80033-99900
	केन्द्रीय कार्यकारी	**श्री प्रेमसिंह रणधा**	
संभाग प्रमुख	**श्री चन्द्रवीरसिंह देणोक**		98299-21888
प्रान्त	जोधपुर शहर (जेडीए क्षेत्र, लूणी)	श्री उम्मेदसिंह सेतरावा	76650-05390
	शेरगढ़ (शेरगढ़ बालेसर)	श्री भैरूसिंह बेलवा	98291-70350
	ओसियां (ओसियां, बापिणी)	श्री शैतानसिंह सगरा	91191-14555
	भोपालगढ़ (बिलाड़ा, भोपालगढ़)	श्री भरतपालसिंह दासपां	94145-60797
संभाग प्रमुख	**श्री अर्जुनसिंह देलदरी**		98284-56333
प्रान्त	पाली	श्री मोहब्बतसिंह धींगाणा	97725-89809
	जालोर (आहोर, जालोर, सायला)	श्री गणपतसिंह भंवराणी	98281-36005
	भीनमाल, (भीनमाल जसवंतपुरा)	श्री नाहरसिंह जाखड़ी	94145-65289
	सांचौर (सांचौर, रानीवाड़ा)	श्री महेन्द्रसिंह कारोला	94144-25505
	सिरोही	श्री सुमेरसिंह उथमण	94602-62224
	केन्द्रीय कार्यकारी	**श्री गंगासिंह साजियाली**	94143-96375
संभाग प्रमुख	**श्री भंवरसिंह बेमला**		94138-13601
प्रान्त	उदयपुर शहर	श्री सुरेन्द्रसिंह रोलसाबसर	85600-23447
	उदयपुर ग्रामीण	श्री भगतसिंह बेमला	97845-40771
	राजसमन्द	श्री फतेहसिंह भटवाड़ा	99280-46575
	बांसवाड़ा	श्री हनवन्तसिंह एसएसगड़ा	99835-65520
	डूंगरपुर	श्री गुमानसिंह वलाई	94147-24408
संभाग प्रमुख	**श्री बृजराजसिंह खारड़ा**		94142-11465
प्रान्त	अजमेर शहर	श्री शिवदयाल सिंह खुड़ी	94140-05449
	अजमेर ग्रामीण	श्री विजयराज सिंह जालिया	96022-46116
	भीलवाड़ा	श्री बृजराजसिंह खारड़ा	94142-11465
	चित्तौड़गढ़	श्री जीवनसिंह नरधारी	94139-78303
	मालवा	श्री गोपालशरण सिंह सहाड़ा	94136-41017
	केन्द्रीय कार्यकारी	**श्री महेन्द्रसिंह पांची**	
संभाग प्रमुख	**श्री धर्मेन्द्रसिंह आमली**		99249-94465
प्रान्त	भावनगर शहर	श्री भागीरथसिंह सांडखाखरा	94285-22316
	भाल	श्री जयपालसिंह धोलेरा	93289-55455
	मोरचंद	श्री अर्जुनसिंह मोरचंद	89807-08137
	खोडियार	श्री मंगलसिंह धोलेरा	94265-47936
	झालावाड़	श्री भूरूभा मोढवाणा	99253-00400
	कच्छ	श्री तनसिंह बिजावा	94280-83117
संभाग प्रमुख	**श्री दीवानसिंह काणेटी**		96383-58777
प्रान्त	अहमदाबाद-गांधीनगर	श्री जगतसिंह वलासना	99987-38410
	अहमदाबाद ग्रामीण	श्री दीवानसिंह काणेटी	96383-58777
संभाग प्रमुख	**श्री विक्रमसिंह कमाणा**		94292-23910
प्रान्त	मेहसाणा	श्री इन्द्रजीतसिंह जेतलवासना	99097-55963
	बनासकांठा	श्री अजीतसिंह कुणघेर	94297-16851
	साबरकांठा	श्री महावीरसिंह हरदासकाबास	94298-36882
	केन्द्रीय कार्यकारी	केन्द्र	
संभाग प्रमुख	**श्री नीरसिंह सिंघाना**		92233-41965
प्रान्त	मुम्बई	श्री रणजीतसिंह आलासन	97691-31066
	पूणे	श्री रणजीतसिंह चौक	99232-30825
	सूरत	श्री खेतसिंह चान्देसरा	99744-93721
	शेष दक्षिण भारत	श्री पवनसिंह बिखरण्या	98811-32045
संभाग प्रमुख	**श्री दीपसिंह बैण्यांकाबास**		99830-78181
प्रान्त	उत्तरप्रदेश	श्री जितेन्द्रसिंह सिसरवादा	77260-00111
	दिल्ली	श्री रेवतसिंह धीरा	96502-50458

संपादकीय

दरकने न दें सामाजिक संयोजन

विगत दिनों हुए चुनावों के बाद कई प्रकार की चर्चाएं चल रही हैं। हमारे विधायकों की संख्या घटने को लेकर भी कई प्रकार के विश्लेषण किए जा रहे हैं। नागौर, अजमेर, जैसलमेर आदि जिलों में मुख्य राजनीतिक दलों के टिकट के बावजूद हमारे समाज का एक भी प्रत्याशी नहीं जीतना समाज की पीड़ा से पीड़ित लोगों को पीड़ा पहुंचा रहा है। इन बातों पर हो रही चर्चाओं एवं विश्लेषणों में अनेक बातें उभर कर आ रही हैं। इन्हीं बातों में से एक है कि इस बार हमारा हमारी समर्थक जातियों के साथ सही मेलजोल नहीं रहा। वैसे तो पूरे राजस्थान के संदर्भ में बात करें तो अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग जातियों के साथ हमारा स्वाभाविक समीकरण बनता है इसलिए पूरे राज्य के लिए कोई आदर्श गठजोड़ तो निर्धारित नहीं किया जा सकता लेकिन कमोबेश यह माना जाता है कि अनुसूचित जाति एवं जनजाति तथा मुस्लिम मतदाता हमारे साथ सहजता महसूस करते हैं। राजनीतिक वर्चस्व की लड़ाई में जो जातियां हमारे साथ प्रतिस्पर्धा रखती हैं उनकी अपेक्षा ये जातियां हमारे साथ सहज रहती हैं। इसके अनेक उदाहरण हमारे सामने हैं। विगत लोकसभा चुनावों को देखें तो टिकट कटने के बाद भी बाड़मेर जैसलमेर संसदीय क्षेत्र में जसवंतसिंह जी को मिले 4 लाख से अधिक वोटों के पीछे निश्चित रूप से यह संयोजन प्रभावी था। शेखावाटी के अनेक विधानसभा क्षेत्रों में बसपा, लोजपा या निर्दलीय के रूप में हमारे समाज के विधायकों का जीतना इसी संयोजन का उदाहरण है। आजादी के तुरन्त बाद भी पनपे राजनीतिक हालातों में हमारे समाज के तात्कालिक राजनीतिक चिंतकों ने इस संयोजन पर विशेष जोर दिया था जिनमें श्रद्धेय माट्साब आयुवानसिंह जी प्रमुख हैं। पूज्य तनसिंह जी भी सांसद रहते इन वर्गों के सभी सांसदों के स्वाभाविक नेता बने रहे। नागौर जिले में और उससे लगते शेखावाटी क्षेत्र में कायमखानी-राजपूत गठजोड़ स्वाभाविक रूप से बनता है। कायमखानी आज तक हमारे रीति-रिवाजों एवं परम्पराओं को अपनाएं हुए हैं और अपने आपको राजपूतों के निकट मानकर गौरवान्वित होते हैं। लेकिन इस बार निश्चित रूप से वह संयोजन दरका और उस दरकने का असर चुनाव में स्पष्ट रूप से दिखा। हमारे साथ विभिन्न जातियों के ऐसे संयोजन के दरकने के अनेक कारण हो सकते हैं लेकिन संत परम्परा तो कहती है कि दूसरों की अपेक्षा अपनी कमियां ढूंढनी चाहिए और उन्हें दूर करने का प्रयास किया जाना चाहिए। बाहर की कमियां भी उपेक्षणीय नहीं हैं लेकिन पहली चोट तो स्वयं की कमियों पर ही लगनी चाहिए। यदि अंगुली हमारी अपनी तरफ करते हैं तो पाते हैं कि हमारी अपनी गलतियां भी कम नहीं हैं। हर व्यक्ति सम्मान के साथ जीना चाहता है। हर व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का सम्मान चाहता है। बोली का सम्मान हमारी परम्परा रही है, संस्कृति रही है। मेहतराणीजी, ढोलणजी, खवासजी, खाती बाबो, बारहठजी बाबाजी आदि सब हमारे द्वारा ही तो किए जाने वाले संबोधन थे। जरा सोचें क्या अब भी हमारे संबोधन वे ही रहे है। कहते हैं तलवार का घाव भर जाता है लेकिन बोली का घाव नहीं भरता और ऐसा ही हो रहा है। जब सत्ता हमारे पास थी, लोगों ने स्वाभाविक रूप से हमें नेता मान रखा था तब तो हम सबके साथ सम्मानजनक भाषा में बात करते थे और आज जब हमें सब लोगों के समर्थन की आवश्यकता है तब उनको ओछा बोलकर समर्थन चाहते हैं। जरा सोचें कि क्या यह संभव है कि जिस व्यक्ति को आपने चौराहे पर ओछे शब्दों में संबोधन किया है क्या वह कभी मन से आपका समर्थक हो सकता है। लेकिन हमने अति उत्साह में ऐसा किया। अनुसूचित जाति-जनजाति अत्याचार निवारण कानून को लेकर जिस प्रकार से हमने झंडा उठाया वह भी क्या वर्तमान राजनीतिक माहौल में आत्मघाती नहीं था। निश्चित रूप से वह कानून अतिवादी है लेकिन उससे बचने के अनेक तरीके भी हैं। केवल सड़कों पर हो-हल्ला, सोशल मीडिया पर ओछी भाषा का प्रयोग एवं प्रेस के सामने बार-बार उसके विरोध का झंड़ा हमारे द्वारा उठाए रखने की घोषणाएं क्या इस दरकन में सहयोगी नहीं रहीं। आनंदपाल प्रकरण में हमारी मांगे सरकार से थीं और उसके लिए सरकार से संघर्ष भी हो रहा था, लेकिन उसके लिए हमारे अति उत्साही लोगों द्वारा एक कायमखानी विधायक के खिलाफ माहौल बनाना क्या हमारे हित में था? क्या इससे पूरी शेखावाटी के कायमखानी राजपूत संजोयन में दरकन नहीं आई। आप इस दरकन के अनेक कारण गिना सकते हैं लेकिन क्या हमारे अति उत्साही लोगों की हरकतों को नजरंदाज किया जाना चाहिए। ऐसे ही अनेक उदाहरण हो सकते हैं इस संयोजन की दरकन को पुष्ट करते हैं। लेकिन पुरुषार्थी लोग केवल विश्लेषण तक सीमित नहीं रहते बल्कि उस विश्लेषण से निकले परिणामों को यथार्थ में बदलने में प्रवृत्त होते हैं। ऐसे में आज आवश्यकता है कि हम सोशल मीडिया पर की जाने वाली हमारी गैर जिम्मेदाराना हरकतों को रोकने में प्रवृत्त हों। हम हमारी समावेशी परम्पराओं को अपनाएं और हर व्यक्ति को अपना मानकर उसके व्यक्तित्व का सम्मान करें। इसके लिए हमें बहुत ज्यादा प्रयास करने की भी आवश्यकता नहीं है, बहुत पीछे लौटने की भी आवश्यकता नहीं है। जब कभी किसी के व्यक्तित्व के प्रति असम्मानजनक भाषा का प्रयोग करें तब थोड़ा रुककर सोच लें कि जिनके प्रति आप ऐसा कर रहे हैं उनकी बुजुर्ग महिला जब हमारे घर आती हैं तब हमारी महिलाएं उनको 'पगै लागणां' बोलती हैं। बस थोड़ा सा अपने आपका स्मरण कर लें तो बहुत कुछ वह छूट सकता है जो हम अन्यों की नकल कर अपना रहे हैं। यदि हम केवल और केवल हमारी ही श्रेष्ठताओं का अनुकरण कर लें तो सब ठीक हो सकता है और वही प्रयास सार्थक प्रयास है जो श्रेष्ठता की ओर बढ़ाता है।

जयपुर में संभागीय बैठक

संघ के जयपुर संभाग की संभागीय बैठक केन्द्रीय कार्यालय संघशक्ति में 18 दिसम्बर को संपन्न हुई। बैठक में संभाग के जयपुर शहर, जयपुर दक्षिण-पश्चिम, जयपुर उत्तर-पूर्व, अलवर एवं दौसा प्रांत के प्रांत प्रमुख एवं सहयोगी स्वयंसेवकों ने भाग लिया। बैठक में प्रत्येक प्रांत में संघ स्थापना दिवस मनाने का कार्यक्रम बनाया गया। जयपुर शहर का कार्यक्रम केन्द्रीय कार्यालय संघशक्ति में रखना तय किया गया। बैठक में तय किया गया कि प्रत्येक प्रांत में प्रांतीय बैठक कर अगले वर्ष का कार्यक्रम बनाया जाए। प्रत्येक स्वयंसेवक किसी न किसी शाखा में जाए, इसके लिए निर्देशित किया गया। संघशक्ति-पथप्रेरक की ग्राहक सदस्यता के लिए अभियान चलाने की चर्चा की गई। प्रत्येक माह के अंतिम शनिवार को जयपुर शहर में रहने वाले स्वयंसेवकों के लिए रात्रि विश्राम संघशक्ति में करने का निर्णय लिया गया। बैठक में वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीर सिंह सरवड़ी, संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास, केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्रसिंह आऊ का सानिध्य मिला।

ओसियां के केरलावास में बैठक

ओसियां (जोधपुर) के केरलावास बैठवासिया गांव में राजपूत समाज के बुजुर्गों एवं युवाओं की एक बैठक रखी गई जिसमें हुए विचार विमर्श के बाद समाज में व्याप्त कुरीतियों का बहिष्कार करने का निर्णय लिया। उपस्थित समाज बंधुओं ने संकल्प लिया कि गांव में शादी, सगाई, जागरण, मृत्यु सहित सभी सामाजिक एवं पारिवारिक समारोहों में अफीम, डोडा एवं शराब की मनुहार पर पूर्णतया रोक रहेगी। इस अवसर पर रामसिंह, तेजसिंह, गंगासिंह, जबरसिंह, देवीसिंह, राजूसिंह आदि अनेक लोग उपस्थित रहे।

के.वी. सिंह राठौड़ अध्यक्ष एवं महावीर सिंह देवड़ा महासचिव निर्वाचित

भारतीय जीवन बीमा जोधपुर संभाग के विकास अधिकारियों के संगठन नेशनल फैडरेशन ऑफ इंश्योरेंश फील्ड वर्क्स ऑफ इंडिया का द्विवार्षिक मंडल स्तरीय अधिवेशन केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत के आतिथ्य में संपन्न हुआ। इसमें नई कार्यकारिणी का निर्विरोध निर्वाचन किया गया जिसमें के.वी. सिंह राठौड़ (चांदरख) को अध्यक्ष एवं महावीरसिंह देवड़ा को महासचिव निर्वाचित किया गया। के.वी सिंह चांदरख मारवाड़ राजपूत सभा के महासचिव भी है।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	दंपत्ति शिविर	02.02.2019 से 04.02.2019 तक	आलोक आश्रम, भारतीय ग्राम्य आलोकायन गेहूं रोड, बाड़मेर

दीपसिंह बैण्यांकाबास, शिविर कार्यालय प्रमुख

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

विधानसभा क्षेत्र रानीवाड़ा (जालोर) से **श्री नारायणसिंह देवल** एवं विधानसभा क्षेत्र सिवाणा (बाड़मेर) से **श्री हमीरसिंह भायल** के दूसरी बार विधायक बनने पर **हार्दिक बधाई** एवं **उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।**

शुभेच्छु :

गणपतसिंह पीपळून
(बाड़मेर) हाल मुम्बई

छैलसिंह धीरा
(बाड़मेर) हाल मुम्बई

विक्रमसिंह मेड़क
(जालोर) हाल मुम्बई

नारायणसिंह रेवत
(जालोर) हाल मुम्बई

श्रीपालसिंह सुरावा
(जालोर) हाल मुम्बई

इन्द्रसिंह काठाड़ी
(बाड़मेर) हाल मुम्बई

हुकमसिंह पीपळून
(बाड़मेर) हाल मुम्बई

शंभुसिंह बालियाना
(बाड़मेर) हाल मुम्बई

सुरेन्द्रसिंह मिठौड़ा
(बाड़मेर) हाल मुम्बई

श्रवणसिंह मवड़ी
(बाड़मेर) हाल मुम्बई

जालमसिंह मिठौड़ा
(बाड़मेर) हाल मुम्बई

ओखसिंह मिठौड़ा
(बाड़मेर) हाल मुम्बई

श्रवणसिंह काठाड़ी
(बाड़मेर) हाल मुम्बई

जेठुसिंह अकोली
(जालोर) हाल मुम्बई

वाघसिंह रेवत
(जालोर) हाल मुम्बई

करणसिंह कलापुरा
(जालोर) हाल मुम्बई

मोटूसिंह पीपळून
(बाड़मेर) हाल मुम्बई

महेन्द्रसिंह पीलवा
हाल कारोला, जालोर

रघुनाथसिंह मवड़ी
(बाड़मेर) हाल मुम्बई

हुकमसिंह काठाड़ी
(बाड़मेर) हाल मुम्बई

इंजीनियरिंग के छात्रों का मर्गदर्शन

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय से संबद्ध एम.बी.एम. इंजीनियरिंग कॉलेज प्रतिवर्ष अपने पूर्व छात्रों का रजत जयंती समारोह मनाता है। इस वर्ष 1993 के बैच का रजत जयंती समारोह 21 से 23 दिसम्बर तक रखा गया। इसी समारोह के दौरान आए ख्यातिनाम इंजीनियर्स ने इस क्षेत्र के राजपूत विद्यार्थियों के लिए मारवाड़ क्लब, उम्मेद हेरिटेज में एक मार्गदर्शन कार्यशाला रखी। इस कार्यशाला को भारतीय इंजीनियरिंग सेवा के वरिष्ठ अधिकारी एवं वर्तमान दूरसंचार विभाग में पदस्थ, भागीरथ सिंह निर्वाण, सेवानिवृत मुख्य अभियंता गोपाल सिंह भाटी, दशकों से अमेरिका में कार्यरत वरिष्ठ कम्प्यूटर इंजीनियर विरेन्द्रसिंह, वरिष्ठ माईनिंग इंजीनियर दीवानसिंह देवड़ा, अमेरिका में सेवा देकर भारत लौटे एवं वर्तमान में लगभग एक दशक से अपनी सूचना तकनीक कंपनी चला रहे वरिष्ठ इंजीनियर पवनसिंह बिखरण्या, माईनिंग इंजीनियर पुष्पेन्द्रसिंह जोधा, आर्किटेक्ट डॉ. अजयपाल सिंह, चन्द्रशेखर सिंह खींची, गोविन्दसिंह राठौड़ आदि ने संबोधित किया। वक्ताओं ने Communication Skills, Logical Reosoning और Aptitude Development के तरीके और उनकी महत्ता पर विस्तार पूर्वक जानकारी दी। उपस्थित छात्रों को तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में उपलब्ध विभिन्न अवसरों की जानकारी दी गई। छात्रों ने चर्चा करते हुए प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु सामग्री, इंटर्नशिप हेतु मार्गदर्शन एवं कंपनियों की चयन प्रक्रिया की जानकारी के अभाव के बारे में बताया। वरिष्ठ लोगों ने ये कमियां दूर करने एवं आवश्यक सुविधाएं जुटाने का आश्वासन दिया।

नागौर संभाग का स्नेहमिलन

नागौर संभाग के स्वयंसेवकों की संभागीय बैठक आयुवान निकेतन में 22 दिसम्बर को रखी गई जिसमें 16 दिसम्बर को संघशक्ति में आयोजित केन्द्रीय बैठक में हुई चर्चा की जानकारी दी गई। शीतकालीन अवकाश में लगने वाले मा.प्र.शि. को लेकर चर्चा की गई। संघशक्ति, पथप्रेरक की ग्राहक सदस्यता को लेकर भी लक्ष्य तय किए गए।

बैगलूर शाखा का भ्रमण

संघ की बैगलूर शाखा द्वारा 12 से 14 दिसम्बर तक तीन दिवसीय एडवेंचर कैप एवं भ्रमण का आयोजन किया गया जिसमें शाखा के 15 स्वयंसेवक शामिल हुए। सभी लोगों ने कर्नाटक की तीसरी ऊंची चोटी पुष्पगिरी की चढ़ाई की। इसके लिए आठ घंटे तक लगातार चढ़ाई चढ़नी पड़ती है।

कचनारा (म.प्रदेश) में बैठक

मालवा क्षेत्र में 24 दिसम्बर से आयोज्य प्रा.प्र.शि. की तैयारी बाबत् कचनारा स्थित रामदेव मंदिर धर्मशाला के सभा भवन में बैठक रखी गई जिसमें महेन्द्रसिंह फतेहगढ़, बलवंतसिंह कुन्ताखेड़ी, सुतीक्ष्णसिंह कचनारा, राजेन्द्रसिंह हरसौल आदि अनेक गणमान्य समाजबंधु उपस्थित रहे। बैठक में शिविर की व्यवस्था एवं संख्या बाबत विस्तार से चर्चा की गई। बैठक के पश्चात सभी ने निर्माणाधीन राजपूत समाज धर्मशाला एवं राजपूत सभा भवन का अवलोकन किया एवं उत्कृष्ट निर्माण बाबत निर्माण समिति के प्रति आभार प्रकट किया।

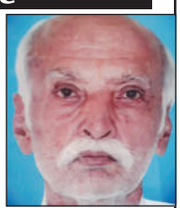

अर्जुनसिंह मोरचंद को पितृ शोक

संघ के मोरचंद प्रांत (गुजरात) के प्रांत प्रमुख अर्जुनसिंह मोरचंद के पिताजी **विक्रमसिंह** का 22 दिसम्बर 2018 को देहावसान हो गया। पथ प्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति एवं शोक संतप्त परिवार को सांत्वना के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

विक्रमसिंह

दु:खद अवसान

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक अड़िसालसिंह लोहरवाड़ा की पत्नी **श्रीमती किरण कंवर** का देहावसान 28 दिसम्बर को हो गया। पथप्रेरक परिवार शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है एवं दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

श्रीमती किरण कंवर

भावपूर्ण श्रद्धांजलि

बिछुड़ गए बीच राह में, दिल से ना जा पाओगे।
आंखों में आंसू है गम के, उम्र भर याद आओगे।।

हमारे आदरणीय प्रेरणास्त्रोत

स्व. मगसिंह

पुत्र भूरसिंह देवल ठिकाना जावीया की द्वितीय पुण्यतिथि पर हम सब उनके आत्मज उन्हें अश्रुपूरित श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

देहावसान : 1.1.2017

श्रद्धानवत : ठा. भोपालसिंह, हिम्मतसिंह **(एडिशनल एसपी)**, माधुसिंह, देवेन्द्रसिंह **(जिला मंत्री भाजपा, जालोर)**, लालसिंह, प्रतापसिंह, अर्जुनसिंह, नाथुसिंह, गुलाबसिंह, गणपतसिंह, गोपालसिंह, नारायणसिंह **(भाई)**, नरेन्द्रसिंह, महिपालसिंह **(पुत्र)**, समुन्द्रसिंह, दीपसिंह, नितिनसिंह, कृष्णपालसिंह, नेपालसिंह **(भतीज)**, शौर्यवर्धनसिंह **(पौत्र)** एवं समस्त देवल परिवार।

ठिकाना : जावीया (जसवंतपुरा), जिला-जालोर।

इस पृष्ठ धारावाहिक रूप से छप रहे आलेख धर्मशास्त्र 'गीता' का शेष भाग अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

एन.आई.ओ.एस. कोड : 170347

कोई भी कक्षा पास या फेल आधार कार्ड से सीधे 10वीं करें, कोई उम्र बंधन नहीं, टी.सी. की जरूरत नहीं। 5वीं या 8वीं पास महिला, बुजुर्ग सीधे दसवीं करें। सरपंच बनें, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता बनें।

सांगसिंह राठौड़, सोलंकियातला - 9783202923

आदर्श सी.सै.स्कूल, सोलंकियातला (शेरगढ़), जिला-जोधपुर

IAS/ RAS

तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान

स्प्रिंग बोर्ड

Spring Board

Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur

website : www.springboardindia.org

परमवीर डिफेन्स एकेडमी

सैन्य सेवाओं को समर्पित संस्थान

आर्मी नेवी

एयरफोर्स SSC-GD NDA/CDS

भाटी भवन, महिला पुलिस थाने के सामने, रातानाडा

जोधपुर 9166119493

(पृष्ठ एक का शेष) आंसू, पसीना...

जयपुर

मुंबई

पूज्य तनसिंह जी का कहना था कि अपनों के विरोध से रुको मत, उनका विरोध भी मत करो, अपना काम सतत जारी रखो, विरोध अपने आप समाप्त हो जाएगा। संघ ने यह भी अपने छोटे से जीवन में अनुभव किया है। नववर्ष संदेश में अपने सुना कि आज का दिन ऐतिहासिक है क्योंकि आज ही के दिन सदियों बाद बहती हुई नाली को रोकने का प्रयास किया गया था। यह बढ़ता हुआ कदम नहीं रुकेगा। नहीं रुकेंगे- नहीं झुकेंगे के संकल्प के साथ संघ के सैकड़ों लोग लोक शिक्षण, लोक संग्रह एवं लोक सम्पर्क कर रहे हैं। इसके लिए जागना पड़ता है, खड़ा होना पड़ता है, खड़ा होकर सेवा करना प्रारम्भ करता है, सेवा करने पर पास बैठने वाला बनता है, पास बैठने पर साक्षात देखता है, सुनता है, मनन करता है तो ज्ञाता होता है और ज्ञान आचरण में आता है तो विज्ञाता बनता है। इन्हीं छोटे-छोटे सूत्रों के आधार पर संघ काम करता है।

संघशक्ति प्रांगण में आयोजित कार्यक्रम में सैकड़ों महिला-पुरुषों ने भाग लिया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बैण्यांकाबास ने संघ प्रमुख श्री द्वारा प्रदत्त नव वर्ष संदेश का पठन किया। केन्द्रीय कार्यालय के साथ-साथ भारत भर में फैली संघ की सभी शाखाओं में छोटे-बड़े कार्यक्रम रखे जाने के समाचार हैं। गुजरात एवं राजस्थान के अतिरिक्त मुंबई एवं सूरत की शाखाओं ने मिलकर कार्यक्रम किया। चैन्नई, बैंगलोर, पूणे की शाखाओं में भी स्थापना दिवस मनाया गया। दुबई में रोजगाररत स्वयंसेवकों ने भी संघ के स्थापना दिवस पर अपने साथियों सहित कार्यक्रम का आयोजन किया। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में रहने वाले स्वयंसेवकों ने भी स्थापना दिवस मनाया। जोधपुर संभाग में दुर्गादास पार्क बीजेएस, संभागीय कार्यालय तनायन, पंचवटी छात्रावास चौपासनी, संजीवनी प्रशिक्षण केन्द्र बीजेएस, मंगल बाल विद्यालय बेलवा, सुण्डो का बास बस्तवा, अर्जुन छात्रावास नांदड़ी, सरस्वती छात्रावास नांदड़ी, संस्कार विद्यालय लोड़ता, नागाणाराय विद्यालय मदासर देड़ा, आईनाथ छात्रावास बीजेएस, सरस्वती विद्यालय देवातु, सोलंकियातला, तेना, चाबा, सोमेसर, तिंवरी, भूंगरा, साटीका, शेरगढ़, जय भवानी नगर बासनी, देचु, खिरजां, सेखाला, कुड़ी भगतासनी, राजगढ़ बेलवा, भगतसिंह विद्यालय तिंवरी, साथीन, शिक्षक कॉलोनी चौपासनी, आशापुरा छात्रावास चौपासनी, रामदेव छात्रावास पावटा, बेदु, सरदार छात्रावास जोधपुर, डेरिया, गोपालसर, झिंझनियाला कल्ला, खोखरिया, राजपूत सभा भवन बालसमंद, शक्ति वाटिका ओसियां, खिंयासरिया, सेतरावा, चौरड़िया, सरस्वती विद्यालय बस्तवा सहित लगभग 50 शाखाओं में स्थापना दिवस मनाया गया। हणवंत छात्रावास शाखा में वरिष्ठ स्वयंसेवक नारायणसिंह माणकलाव व शिक्षक कॉलोनी में वरिष्ठ स्वयंसेवक राजसिंह आमला ने संघ के प्रारम्भिक जीवन तथा पूज्य तनसिंह जी के अपनत्व, समर्पण तथा ध्येय निष्ठा के बारे में बताया। सभी स्थानों पर माननीय संघ प्रमुख श्री का नववर्ष संदेश पढ़कर सुनाया गया। जालोर संभाग के सिरोही प्रांत में चांदणा, सियाणा, काणदर, झाडोली वीर, मांडाणी, चुली व रेवदर शाखा में स्थापना दिवस मनाया गया। सांचोर-रानीवाड़ा प्रांत में छोटी विरोल, आकोली, सिवाड़ा, राव बल्लूजी छात्रावास सांचौर, कारोला, सुरावा, पांचला, सेवाड़ा, रतनपुर, रानीवाड़ा में कार्यक्रम रखा गया। भीनमाल प्रांत में माताजी मंदिर दासपां, गोपाल छात्रावास भीनमाल, नरपालदेव छात्रावास जसवंतपुरा, मोटी कोटड़ी पुनासा व प्रताप स्कूल बागोड़ा में स्थापना दिवस मनाया। पाली प्रांत के गोपाल द्वारा सोजत, नृसिंह द्वारा रायपुर, घोड़ावल, बिठौड़ा, बासनी, छोटी रानी, खिंदारागांव, वीर दुर्गादास छात्रावास पाली, गुड़ा चतुरा आदि स्थानों पर कार्यक्रम हुआ। जालोर प्रांत में वीरमदेव राजपूत छात्रावास जालोर, देसु, राज पुष्पक नगर, पांचोटा, मंडला, मोरुआ, बेदाना, जलंधरनाथ छात्रावास सायला, अभिनव स्कूल सांगाणा फांटा, राजेन्द्र गुरु स्कूल जीवाणा, भंवरानी आदि स्थानों पर कार्यक्रम हुआ। जयपुर संभाग के दौसा प्रांत में रानियावास व बाढ़मोहचिंगपुरा में स्थापना दिवस मनाया गया। जयपुर शहर प्रांत की शाखा कनकपुरा स्टेशन में भी स्थापना दिवस मनाया गया। गुजरात में बनासकांठा प्रांत के वलादर, महाराणा प्रताप हॉस्टल दियोदर, राजपूत छात्रावास धानेरा, महेसाणा प्रांत के भैंसाणा, समौ, जगनाथपुरा, खणुसा, पडुस्मा में स्थापना दिवस मनाया गया। अहमदाबाद शहर प्रांत में वलासणा तथा अहमदाबाद ग्राम्य प्रांत की मंगलतीर्थ सोसायटी में कार्यक्रम हुआ। गोहिलवाड़ प्रांत में भावनगर के नवापरा राजपूत छात्रावास, तलाजा, मोरचंद, कच्छ में कार्यक्रम हुए। संघ कार्यालय शक्तिधाम में वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह धोलेरा के सानिध्य में कार्यक्रम हुआ। गोंडल राजपूत समाज भवन में भी कार्यक्रम हुआ। बाड़मेर संभाग में मल्लीनाथ छात्रावास बाड़मेर, कृष्णा हॉस्टल दानजी की होदी बाड़मेर, मीठड़ा, गुड़ामालानी, भवानी बोर्डिंग चौहटन, भूपाल स्कूल गंगासरा, मातेश्वरी स्कूल भिंयाड़, मूंगेरिया में कार्यक्रम हुए। बालोतरा संभाग के कल्याणपुर-समदड़ी प्रांत में दईपड़ा खींचियान व कंकराला शाखा में स्थापना दिवस मनाया गया। बायतु प्रांत में चांदेसरा, परेऊ में तथा सिवाणा प्रांत के कल्ला रायमलोत छात्रावास सिवाणा, जेतमाल छात्रावास पादरू, मीरा बालिका शाखा पादरु, इंद्राणा, कुंडल में कार्यक्रम हुए। बालोतरा प्रांत में वीर दुर्गादास छात्रावास बालोतरा, भूमि विद्यापीठ बुड़ीवाड़ा, नागेणसी मंदिर जागसा, मेवानगर, टापरा, वरिया में स्थापना दिवस मनाया गया। चुरु के लूणासर, डूंगरगढ़, चुरू आदि स्थानों पर कार्यक्रम हुए। नागौर प्रांत में साटिका, छापड़ा, गुगरियाली, मेड़ता सिटी में कार्यक्रम हुए। कुचामन स्थित संघ कार्यालय में भी कार्यक्रम रखा गया। इसके अलावा भूपाल राजपूत छात्रावास चित्तौड़गढ़, मूलाना (जैसलमेर), गनोड़ा (बांसवाड़ा), योगेश्वर छात्रावास कुचामन, नारायण निकेतन बीकानेर, विजयभवन शाखा बीकानेर, पंचवटी छात्रावास बीकानेर, झंझेऊ, पूंदलसर, बेलासर, करणी राजपूत छात्रावास बेनाथा, गोकुल, क्षत्रिय विकास संस्थान भवन सेक्टर 13 उदयपुर, महाराणा कुंभा छात्रावास भीलवाड़ा, सीकर आदि अनेक स्थानों पर स्थापना दिवस मनाने के समाचार मिले हैं। सभी जगह माननीय संघ प्रमुख श्री का नववर्ष संदेश पढ़कर सुनाया गया एवं परमेश्वर से संघ मार्ग पर अनवरत चलने की क्षमता देने की प्रार्थना की गई।

भिंयाड़

जोधपुर

वार्षिक समीक्षा बैठक संपन्न

संघ परमेश्वर का प्रकट स्वरूप

शास्त्रों में हमने पढ़ा कि यह भी पूर्ण है और वह भी पूर्ण है। यहां यह का अर्थ प्रकृति है, संसार है जिसे हम हमारे निकट महसूस करते हैं। जो हमें दिखाई देता है। वह का मतलब हृदय स्थित परमेश्वर है जो है तो सर्वाधिक निकट लेकिन दिखाई नहीं देता इसलिए 'वह' संबोधन है। यह निकटता हमारे समझ में नहीं आती, अनुभव में नहीं आती इसलिए हमने भगवान की मूक मूर्तियां बनाई। भगवान कहते हैं कि प्रकृति रूपी माता के गर्भ में मैं ही बीज रूप में स्थापित होता हूं, इसलिए प्रकृति भी परमेश्वर का प्रकट रूप है और पूरी प्रकृति हमें प्रेरणा देती है लेकिन हम समझ नहीं पाते। ऐसे में संघ हमारे लिए परमेश्वर की बोलती हुई मूर्ति है, प्रकट स्वरूप है जो हमें अपना समझकर पास बैठाकर समझाता है। धर्म पालन की विधि बताता है। सुनने, देखने एवं करने का आह्वान करता है, अभ्यास करवाता है।

16 दिसम्बर को संघशक्ति में सभी दायित्वाधीन स्वयंसेवकों की वार्षिक बैठक को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त संदेश दिया। उन्होंने कहा कि हम ढंग से सुनते नहीं है, देखते नहीं हैं इसलिए कर भी नहीं पाते। संघ बार-बार बुलाकर साथ बैठाकर समझाता है, तनसिंह जी ने इसी प्रकार समझाया तब से यह परम्परा निरन्तर चल रही है। व्यक्ति बदलते रहेंगे लेकिन संघ निरन्तर चलता रहेगा। लेकिन हम देखी और सुनी बातों को भूल जाते हैं, हमारा यह भूलना भी स्वाभाविक है। हम संसार में रहते हैं। एक तरफ भगवान हमें बुला रहा है दूसरी तरफ संसार खींचता है ऐसे में भूलना स्वाभाविक है। हम संघ के सानिध्य में बार-बार नहीं आ पाते, अनेक अड़चने हैं लेकिन यहां भौतिक रूप से ही आना आवश्यक नहीं है बल्कि मानसिक रूप से संघ का सदैव स्मरण रखें। यदि हम ऐसा करेंगे तो सदैव संघ के साथ ही रहेंगे। संघ हमारे घट में स्थित हो जाए तो सदैव स्मरण रहेगा। संघ कोई अल्प अवधि कार्य नहीं है, जीवन भर करने वाला कार्य है, संघ भगवान का नाम है, इसे स्मरण रखें, निरन्तर भौतिक एवं मानसिक रूप से संघ का सानिध्य लेते रहें। ठहरे नहीं, निरन्तर काम करते रहे क्यों कि ठहरा हुआ सड़ जाता है। सब अच्छा हो रहा है, आप सभी काम कर रहे हैं, निराश न होवें लेकिन जो कर रहे हैं वह पर्याप्त नहीं है, इसलिए सदैव संघ का स्मरण रख क्रियाशील रहे।

प्रातः 7.30 बजे साप्ताहिक शाखा से प्रारम्भ हुई यह समीक्षा बैठक अपराह्न तीन बजे संपन्न हुई। शाखा के उपरान्त तीन सत्रों में समीक्षा बैठकें रखी गईं। प्रथम सत्र में संचालन प्रमुख जी द्वारा सभी को संघ के 73वें सत्र के उत्तरदायित्व विभाजन की सूचना दी गई एवं तदुपरान्त सभी संभाग प्रमुखों ने अपने सहयोगियों के साथ बैठकर केन्द्रीय कार्यकारी के निर्देशन में 72वें सत्र का वार्षिक प्रतिवेदन तैयार किया। द्वितीय सत्र में केन्द्रीय कार्यकारियों एवं विभाग प्रभारियों द्वारा अपने-अपने प्रतिवेदन प्रस्तुत किए गए। इस सत्र के अंत में संचालन प्रमुख जी ने मासिक रिपोर्टिंग प्रतिवेदन के बिन्दुओं को स्पष्ट किया। अब तक प्राप्त प्रतिवेदनों की समीक्षा की एवं नियमित रिपोर्टिंग का निर्देशन किया। भोजनोपरांत अंतिम सत्र में दंपत्ति शिविर एवं सामूहिक मिलन शिविर सबसे चर्चा कर तय किए गए एवं आशीर्वाद स्वरूप माननीय संघ प्रमुख श्री का मार्गदर्शन मिला। बैठक में वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह सरवड़ी, दीपसिंह बैण्यांकाबास का सानिध्य मिला।

पृथ्वीराज चौहान की जयंती मनाई

बनासकांठा प्रांत में थराद तहसील के चांगड़ा, कमाली, भूरिया, भलासरा, दीदरड़ा आदि गांवों की ओर से 15 दिसम्बर शनिवार को सम्राट पृथ्वीराज चौहान की 961वीं जयंती चांगड़ा गांव में मनाई गई। गजेन्द्रसिंह चौहान वाव एवं मोहनसिंह चितलवाना के आतिथ्य में हुए कार्यक्रम में कहा गया कि क्षात्र धर्म के पालन से ही राष्ट्र और संस्कृति को जीवित रखा जा सकता है। सिद्धराजसिंह पीलुडा, छैलसिंह, भगवान सिंह, परबतसिंह वलादर आदि ने आयोजन में विशेष योगदान दिया।

रावत कांधल जी का बलिदान दिवस मनाया

क्षत्रिय सभा बीकानेर द्वारा वीर रावत कांधल जी का बलिदान दिवस 27 दिसम्बर को मनाया गया जिसमें उन्हें पुष्पांजलि अर्पित की गई एवं वक्ताओं ने उनके त्याग व वीरता के बारे में बताया।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org